DOI: 10.51220/hjssh.v6i1.11

Himalayan J. Soc.Sci. & Humanities Vol- 6 pp.81 - 85 , December, 2011, ISSN. 0975 - 9891

पण्डित नेहरू की गढ़वाल यात्रा
(स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के संस्मरणों पर आधारित)

सुरेश चन्दोला
इतिहास विभाग
हे.नं.ब. गढवाल विश्वविद्यालय परिसर-पौड़ी (गढ़वाल) 246001

Received:7-8-2011 **Revised:16-10-2011** **Accepted:25-11-2011**

ABSTRACT

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में गढ़वाल हिमालय का अपना विशिष्ट योगदान है। देज़-प्रेम से ओत-प्रोत इस क्षेत्र की जनता के हृदयों में स्वतंत्रता की भावना उत्पन्न करने के लिये राष्ट्रनायक पण्डित जवाहरलाल नेहरू का योगदान कम नहीं है। समय-समय पर पण्डित नेहरू द्वारा गढ़वाल हिमालय में यात्रयें की गयीं। यहां की विषम् भौगोलिक परिस्थितियां भी पण्डित नेहरू को गढ़वाल आने से नहीं रोक पायीं। पण्डित नेहरू के व्यक्तित्त्व, उनके ओजस्वी भाषणों, देश के प्रति उनके समर्पण, मानव में स्वाभिमान जागृत करना आदि ऐसे कारण थे जिनसे गढ़वाल वासी प्रभावित हुये बिना न रह पाये। यही कारण था कि सन् 1942 में अंग्रेजों भारत छोड़ो का नारा सुनते ही सम्पूर्ण गढ़वाल वासी स्वतंत्रता के इस आन्दोलन में सक्रिय हो गये और ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध तब तक संघर्ष करते रहे जब तक कि भारत पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त नहीं हो गया। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि गढ़वाल हिमालय के स्वतंत्रता आन्दोलन में पण्डित जवाहरलाल नेहरू का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। ?

Key-words: पं० जवाहर लाल नेहरू, गढ़वाल यात्रा, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, प्रोत्साहन

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में गढ़वाल हिमालय का योगदान विस्मृत नहीं किया जा सकता। विषम् भौगोलिक परिस्थितियां होते हुये भी यहां के निवासियों ने जिस उत्साह से राष्ट्र को परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त कराने के लिये राष्ट्रीय आन्दोलनों में भागीदारी निभाई वह न केवल प्रशंसनीय है अपितु देश-प्रेम का अद्वितीय उदाहरण भी है। यातायात के साधनों का अभाव, शून्य संचार व्यवस्था, संवादहीनता, जनजागृति का अभाव, अनेक ऐसे कारण थे जिनसे स्थानीय जनता का स्वतंत्रता आन्दोलनों में सक्रिय हो पाना सम्भव नहीं था, परन्तु गढ़वाल हिमालय की उत्साही जनता ने जब एक बार आन्दोलन की राह पकड़ी, तो विश्राम स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् ही पाया।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अनेक राष्ट्रीय नेताओं ने उत्तराखण्ड की यात्रायें कर यहाँ की जनता के हृदयों में राष्ट्रीयता को ज्योति प्रज्वलित की। जहाँ राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने कुमाऊँ की यात्रा की, तो वहीं दूसरी ओर पण्डित जवाहरलाल नेहरू अपनी बहिन विजयलक्ष्मी पण्डित के साथ गढ़वाल आये, तो उनके ओजस्वी व्यक्तित्त्व से सम्पूर्ण गढ़वालवासी प्रभावित हुये बिना न रह सके।

©SHARAD

पण्डित नेहरू आज़ादी से पूर्व तीन बार गढ़वाल आये। सर्वप्रथम सन् 1936 में दुगड्डा (कोटद्वार) तक आये।[1] दुगड्डा में एक जन सभा कर स्थानीय जनता में राष्ट्र-प्रेम की भावना जागृत करने में वे सफल रहे। पुनः सन् 1938 में श्रीनगर (गढ़वाल) में आयोजित राजनैतिक सम्मेलन में सम्मिलित होने आये एवं तीसरी एवं अन्तिम बार वे सन् 1946 में गढ़वाल आये। सन् 1946 में वे गढ़वाल हिमालय के उन आज़ाद हिन्द फौज़ के सैनिकों को सांत्वना एवं प्रोत्साहन देने आये, जो वर्षों विदेशों में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के साथ रह कर देश की स्वाधीनता के लिये अपना सर्वस्व न्यौछावर कर चुके थे। यद्यपि पण्डित नेहरू की गढ़वाल की तीनों यात्रायें यहाँ के निवासियों के हृदयों में स्वतंत्रता की ज्योति प्रज्वलित करने में महत्वपूर्ण रही, परन्तु सन् 1938 में उनकी गढ़वाल यात्रा ने गढ़वाल हिमालय की जनता के दिलों में उनके व्यक्तित्व की जो छाप छोड़ी वह विस्मृत नहीं की जा सकती।

5 एवं 6 मई, 1938 को गढ़वाल कांग्रेस की ओर से श्रीनगर गढ़वाल में एक विशाल राजनैतिक सम्मेलन का आयोजन किया गया। पण्डित नेहरू को इस आयोजन में सम्मिलित होने के लिये आमंत्रित किया गया। उनके मना करने पर भूख हड़ताल करने की घोषणा कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं द्वारा कर दी गई थी।[2] सन् 1937 तक गढ़वाल को यू.पी. लेजिस्लेटिव काउन्सिल की दो सीटें मिल गयी थीं। एक पौड़ी व चमोली तहसील के लिये व दूसरी लैंसडौन तहसील के लिये। सन् 1937 के आम चुनाव ब्रिटिश सरकार द्वारा बनाये गये संविधान के अन्तर्गत हो रहे थे। इस चुनाव में कांग्रेस संस्था ने कांग्रेस पार्टी के नाम पर चुनाव लड़ा और गढ़वाल की दोनों ऐसेम्बली सीटों पर विजय प्राप्त की।[3] इसी विजय प्राप्ति के उपलक्ष्य में 5 एवं 6 मई, 1938 को श्रीनगर में राजनैतिक सम्मेलन का आयोजन किया गया। अनेक बार आग्रह करने के उपरान्त अन्ततः पण्डित नेहरू ने गढ़वाल हिमालय के धार्मिक स्थलों को देखने एवं सम्मेलन में उपस्थित होने की अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी। अपने पांच दिवसीय गढ़वाल भ्रमण में उनके साथ थी उनकी बहिन विजयलक्ष्मी पण्डित और राजा हठीसिंह।

श्रीनगर राजनैतिक सम्मेलन के आयोजन के लिये धन की व्यवस्था तीन प्रकार से की गई थी। पहला जनता से चन्दा एकत्र किया गया, दूसरा स्वागत समिति के द्वारा 11-11 रुपये योगदान दिया गया एवं तीसरा तिरंगा झण्डा 6-6 आने में बेचा गया।[4] 3 मई, 1938 को पण्डित नेहरू वायुयान द्वारा बदरी-केदार की ओर आये। आकाशमार्ग से ही इन दोनों धार्मिक स्थलों को देख वे आनन्द से अभिभूत हो गये। गौचर में वायुयान उतरा, वहीं उन्होंने एक सार्वजनिक सभा को सम्बोधित किया एवं विश्राम किया। कतिपय कारणों से वायुयान श्रीनगर गढ़वाल में न उतर पाया। वायुयान को हरिद्वार उतारा गया। वहाँ से पण्डित नेहरू अपने दल के साथ बाबा काली कमली की मोटर से देवप्रयाग आये। रात्रि विश्राम देवप्रयाग में ही किया गया, जिसकी व्यवस्था रियासत टिहरी के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी प्रेमलाल वैद्य द्वारा की गई। पण्डित नेहरू को श्रीनगर लाने हेतु गढ़वाल कांग्रेस के कार्यकर्त्ता घोड़े लेकर देवप्रयाग पहुंचे। इनमें भक्तदर्शन एवं कोतवाल सिंह नेगी प्रमुख थे।[5]

4 मई, 1938 को पण्डित जवाहरलाल नेहरू अपने दल सहित घोड़ों पर सवार पैदल मार्ग से श्रीनगर पहुंचे। श्रीनगर में उनके दर्ज़नों के लिये गढ़वाल के विभिन्न भागों से जनता पहुंची। वे अपने राष्ट्रनायक की

एक झलक देखने के लिये बेताब थे। 5 मई, 1938 को सही समय पर थाने के तप्पड़ (मैदान)में राजनैतिक सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। ध्वजारोहण के अवसर पर पण्डित नेहरू ने स्वयं ''विजयी विश्व तिरंगा प्यारा'' गाना लय के साथ गाया। इस दिन मौसम खराब चल रहा था। जैसे ही नेहरू जी भाषण देने लगे झमाझम बारिश होने लगी। चूंकि नेहरू जी देवप्रयाग में ही अपनी बरसाती छोड़ आये थे अतः वे भीगने लगे। यह देख एक कार्यकर्त्ता ने अपना छाता नेहरू जी को दे दिया। जिसे उन्होंने बहिन विजयलक्ष्मी पण्डित को दे दिया फिर क्या था सारे पुरुष वर्ग की छतरियां महिला वर्ग तक पहुँच गई और सभा समाप्त होते-होते बारिश से तर-बतर पुरुष वर्ग अपनी नई-नई छतरियों से हाथ धो बैठा।[6]

श्रीनगर बाज़ार (गणेश बाज़ार) में गुजरते हुये एक पनवाड़ी ने चांदी के वर्क में लिपटा और लौंग खुंस्वा एक पान नेहरू जी को भेंट किया। लौंग देखते हुये नेहरू जी पनवाड़ी पर बिगड़ पड़े और बोले-''देश में लौंग का बहिष्कार हो रहा है और तुम जवाहर लाल को लौंग खिला रहे हो'' यह कह लौंग को निकाल कर फेंकने के पश्चात् वे पान लेकर मुस्कराते हुये चले गये।[7]

राजनैतिक सम्मेलन से पूर्व जब पण्डित नेहरू श्रीनगर डाक बंगले में रात्रि विश्राम हेतु गये, तो उनको कई कांग्रसी कार्यकर्ता मिलने को आये। एक ऐसे ही कांग्रेसी कार्यकर्त्ता ने जब उनके चरण स्पर्श करने चाहे तो यह देख वे तुरन्त पीछे हट गये और उसे डांटते हुये बोले-''ये क्या अजीब बदतमीजी है।''[8] मानव में स्वाभिमान जागृत करने में वे बड़े जागरूक थे।

अपने दो दिवसीय कार्यक्रम में पण्डित नेहरू श्रीनगर गढ़वाल में असंख्य कांग्रेसी कार्यकर्त्ताओं से मिले। उन दिनों प्रताप सिंह नेगी कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष, भक्तदर्शन-सचिव तथा हरेन्द्र सिंह, जिला परिषद अध्यक्ष थे।[9] श्रीनगर डाकबंगले में नेहरू जी ने गढ़वाल में यातायात पर स्थानीय लोगों से विचार विमर्श किया। साथ ही उन्हें ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध चल रहे राष्ट्रव्यापी स्वाधीनता संग्राम में गढ़वाल हिमालय में अपनी अलग रणनीति तैयार करने के लिये प्रोत्साहित किया।

7 मई, 1938 को पण्डित नेहरू अपने सहयोगियों सहित पौड़ी आये। श्रीनगर से पौड़ी पैदल मार्ग से जब वे घोड़ों द्वारा आ रहे थे तो पैदल पगडण्डी के दोनों ओर सटे गांवों के सैकड़ों नर-नारी एकत्रित हो गये थे। पण्डित नेहरू ने भी उनको निराश नहीं किया। घोड़े पर बैठे अपना हाथ हिलाकर वे सबका अभिवादन स्वीकार करते चले गये। अनुसूया प्रसाद बहुगुणा, सकलानन्द डोभाल, प्रतापसिंह नेगी, कोतवाल सिंह नेगी एवं हरेन्द्र सिंह रावत रास्ते में आगे-आगे चल रहे थे। नेहरू जी के घोड़े की लगाम हाथ में लिये थे-युवा भक्तदर्शन, जो चलते-चलते नेहरू जी को स्थानीय इतिहास व समीपवर्ती गांवों की जानकारियां देते जा रहे थे।[10] पौड़ी में नेहरू जी मिशन द्वारा चोपड़ा के स्थापित प्रतिष्ठित मेसमोर हाईस्कूल को देखने गये। उनको इस विद्यालय की जानकारी दी गई जो उस समय इस समूचे गढ़वाल का शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था। यहाँ पर कालेज प्रबन्धन की ओर से उनका भव्य स्वागत किया गया। उनके द्वारा एकत्रित जनसमूह को राष्ट्रप्रेम के प्रति जागृत किया। ईसाई मिशनरी द्वारा संचालित स्कूल में ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध बोलना नेहरू जी की प्रमुख

बात रही। वे नगर के दूसरे विद्यालय डी.ए.वी. स्कूल भी गये। कार्यक्रम के सफल संचालन की जिम्मेवारी दी गई थी रामप्रसाद नौटियाल को। स्थानीय रामलीला मैदान में उन्होंने एक सार्वजनिक सभा को सम्बोधित किया। पण्डित नेहरू के ओजस्वी भाषणों को सुनने के लिये दूर-दूर से ग्रामीण एकत्रित हुये थे। स्थानीय जनता को सम्बोधित करते हुये उन्होंने यही कहा, ''मेरे प्यारे गढ़वालवासियों, आपके अदम्य साहस से सम्पूर्ण विश्व विज्ञ है। ब्रिटिश सरकार की सेवा में रहकर आपने अपने अद्‌भुत रणकौशल का जो परिचय दिया है वह किसी से छिपा नहीं है। अब समय आ गया है कि आप अपनी वीरता का प्रदर्शन अपनी मातृभूमि के लिये करें। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि यदि हम सम्पूर्ण भारतवासी एक होकर अपने ऊपर राज कर रहे चन्द अंग्रेजों को भगाने का प्रयास करेंगे तो वह प्रयास निःसन्देह सफल होगा। आओ आज हम सब मिलकर यह संकल्प लें कि भारत हमारा है और हमें भारत की आजादी के लिये अपने जीवन का मोह त्याग कर संघर्ष करना है।''[11]

पण्डित नेहरू के सम्बोधन के पश्चात् सम्पूर्ण रामलीला मैदान ''पण्डित नेहरू जिन्दाबाद'' के नारों से गूंजने लगा। स्थानीय जनता में स्वतंत्रता की अलख जगाने वाला नेहरू उन्हें साक्षात् देवता के रूप में दिखाई देने लगा था। सभा समाप्ति के पश्चात् वे जिला परिषद अध्यक्ष हरेन्द्र सिंह रावत के निवास पर गये, जहाँ उनके लिये जलपान की व्यवस्था की गई थी। जलपान के समय भी वे स्थानीय कांग्रेसी कार्यकर्त्ताओं से स्वतन्त्रा आन्दोलन में गढ़वाल की रणनीति पर विचार-विमर्श करते रहे। कुछ समय विश्राम करने के बाद उन्होंने उसी दिन देवप्रयाग की ओर प्रस्थान किया। रास्ते में पण्डित भिलेश्वरानन्द के यहाँ पर जलपान की व्यवस्था थी, जहाँ नेहरू जी ने झंगोरे की खीर खाई। इस दल को डांडामण्डी में जनता ने इसलिये रोक दिया जो उनका ढोल बाजों के साथ स्वागत करना चाहती थी। कांग्रेसी कार्यकर्त्ता दौलत सिंह के आग्रह पर नेहरू जी ने वहाँ पर एक सभा को सम्बोधित किया। यहाँ भी उनका सम्बोधन देश-प्रेम से ओत-प्रोत था। उन्होंने कहा- ''....कौन कहता है कि हमारे पास आजादी हासिल करने के लिये युवाओं की कमी है? इन पहाड़ों में मेरी नजर जहाँ भी जाती है सभी ओर मुझे देश पर मर मिटने वाले असंख्य नौजवान दिखाई देते है....[12] पण्डित नेहरू के ये वक्तव्य गढ़वाल हिमालय की जनता के हृदयों में स्वतंत्रता की ज्योति जगाने के लिये पर्याप्त थे। दल द्वारा रात्रि विश्राम देवप्रयाग में किया गया। दल अगले दिन हरिद्वार पहुंचा जहाँ से रेलगाड़ी से दल ने इलाहाबाद के लिये प्रस्थान किया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सन् 1938 के मई माह में अपने पांच दिवसीय गढ़वाल भ्रमण कार्यक्रम से पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने यहाँ के निवासियों को स्वतंत्रता प्राप्ति आन्दोलन के लिये प्रेरित किया। यह पण्डित नेहरू के व्यक्तित्व का ही प्रभाव था कि सन् 1941 में पहले व्यक्तिगत सत्याग्रह तत्पश्चात सन् 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन में गढ़वालवासियों ने पूरे उत्साह से भाग लिया। यही कारण है कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में गढ़वाल हिमालय का अपना विशिष्ट योगदान है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1,3. गैरोला, वाचस्पति, नेहरू स्मारिका, पृष्ठ संख्या 87, 59, (सम्पादक, प्रकाशक-नेहरू शताब्दी समारोह समिति, पौड़ी गढ़वाल, 1989)।

2. कर्मभूमि, साप्ताहिक समाचार पत्र, 26 जनवरी, 1956, पृष्ठ संख्या-19 (सम्पादक,नेगी,कुंवर सिंह 'कर्मठ', कोटद्वार-गढ़वाल)।

4. गैरोला, वाचस्पति नेहरू स्मारिका, पृष्ठ संख्या 59, पूर्वोक्त।

5. स्वतंत्रता संग्राम सेनानी प्रेमलाल वैद्य से लिये गये साक्षात्कार के कुछ अंश।

6,7. स्वतंत्रता संग्राम सेनानी आदित्यराम दुदपुड़ी से लिये गये साक्षात्कार के कुछ अंश।

8. साप्ताहिक बदरी-केदार, 16 अक्टूबर,1989,पृष्ठ संख्या-5,(सम्पादक,श्याम सिंह, 2/12 पंजाबी बाग, नई दिल्ली)।

9. वार्षिक पत्रिका जिला परिषद, वर्ष 1940।

10. स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भक्तदर्शन से लिये गये साक्षात्कार के कुछ अंश।

11. स्वतंत्रता संग्राम सेनानी राम प्रसाद नौटियाल के संस्मरणों के कुछ अंश।

12. स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हरिनारायण डोभाल के संस्मरणों के कुछ अंश।